THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

जवाब सितारों में नहीं है

Answers are not in the stars

Author – Bea Roegge

Christian Science Sentinel Vol. 111, No. 41, 12 October 2009

ज्योतिष विद्या शब्द गूगल में टाइप करो और तुम्हें 280 लाख से भी ज़्यादा परिणाम मिलेंगें। इन में से कई वैबसाइटस् स्थानीय अखबार या पत्रिका में छपने वाली राशिफल की छोटी भविष्यवाणियों की तुलना में कई ज़्यादा सेवाएं प्रस्तुत करती हैं। उनमें अनुकूलता तथा रोमांस के गणक, विभिन्न प्रकार की ज्योतिष विद्या तथा भविष्य बताने के अन्य तरीके हैं ।

पहले यह शायद खेल लगता हो, इस में खतरा भी है कि कुछ समय के बाद एक साइट का प्रयोग करने वाला ''भाग्य'' की भविष्यवाणियों की ओर देखना तथा उन में विश्वास करना शुरू कर देगा । बल्कि, शायद कोई इस ''प्रमाण'' की भी तलाश शुरू कर दे कि दिन के राशिफल में कुछ सच्चाई है। वास्तव में यह एक फिसलने वाली ढलान है क्योंकि यह किसी को एक **परमेश्वर**** में विश्वास करने से परे इस मत में ले जाती है कि सितारे किसी के भाग्य को नियंत्रित करते हैं।

बाइबल दस आज्ञाओं में से पहली में स्पष्ट रूप से वर्णन करती है, ''तुम मेरे सिवाए किसी और को **परमेश्वर** नहीं मानोगे।'' तथा दूसरी आज्ञा में ''ऊपर आकाश में किसी भी चीज़ का प्रतिरूप'' न मानने की चेतावनी निश्चित रूप से यह सलाह देती है कि हमें सितारों को नहीं पूजना चाहिए (निर्गमन 20:3,4)। यह आज्ञाएँ दर्शाती हैं कि हमें मार्गदर्शन के लिए एक अनन्त **परमेश्वर** के इलावा और कहीं नहीं देखना चाहिए।

यह समझना आसान है कि पूर्वजों ने सितारों को कुछ विशेष क्यों समझा होगा, उनके सुदूर सुंदर तथा अद्भुत होने के नाते । परन्तु कोई भी ज्ञान जो कोई राशिफल से प्राप्त कर सकता है, वह अन्धविश्वास पर आधारित होता है, यह कोई वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता। ऐसे निर्देशन पर भरोसा करना विनाशकारी हो सकता है क्योंकि यह शायद मूर्खतापूर्ण निर्णयों की ओर ले जाए। इसके अतिरिक्त, मार्गदर्शन के लिए भौतिक स्रोत की ओर मुड़ना, वास्तव में **परमेश्वर** का अनादर तथा आज्ञाओं की अवहेलना करना है।

फिर भी यह जानने योग्य है कि एक लंबे समय तक एक यथार्थ विज्ञान – खगोल विद्या –तथा ज्योतिष विद्या में अंतर नहीं किया गया था। जब क्रिश्चियन साँयस की संस्थापिका पहली बार अठारहवीं शताब्दी में लिख रही थी, तब भी ज्योतिष विद्या तथा खगोल विद्या में अंतर सदा स्पष्ट नहीं था।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

बॉस्टन में मेरी बेकर एडी पुस्तकालय के अनुसार, यह पता चलता है कि श्रीमती एडी ने क्यों लिखा कि "ज्योतिष विद्या अपने स्थान पर सही है, परन्तु यह स्थान कम महत्व का है" (मिसलेनियस राइटिंगस 1883–1996, पृष्ठ 334)। वह वास्तव में सितारों के शैक्षिक अध्ययन के बार में ज़िक्र कर रही थी, किन्हीं अंधविश्वासी मतों का आदर न करते हुए। ज्योतिष विद्या शब्द केवल यहीं एक बार उनके प्रकाशित लेखों में प्रकट होता है, चाहे उन्होंने कई अन्य स्थानों पर दूसरे विज्ञानों के साथ खगोल विद्या को उचित स्थान देते हुए उल्लेख किया है।

ज्योतिष विद्या यह आश्वासन भी देती है कि यह हमारी पहचान का रहस्योद्घाटन कर सकती है। यह वर्णन करती है कि हमारे जन्म के समय पर सितारों की दशा के कारण हम कुछ अच्छी तथा बुरी दोनों ही विशेषताएं प्राप्त करते हैं। संक्षेप में, यह दिव्य **आत्मा** का विचार होने के नाते हम सब के आध्यात्मिक आत्मत्व तथा व्यक्तित्व को नकारता है। यह अपने अनुयायियों को प्रेममयी **परमेश्वर** के हाथों में होने के स्थान पर स्वंय को पूर्णतः नश्वर तथा सितारों के रहम पर समझने के लिए विवश कर देगा। इस तरह की सोच में आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि की बहुत कम जगह होती है तथा हम में से प्रत्येक से बात करती हुई **परमेश्वर** की आवाज की सक्रिय उपस्थिति को कोई श्रेय नहीं देती।

साँयस एण्ड हैल्थ में, मेरी बेकर एडी व्याख्या करती है "क्राइस्ट सच्चा विचार है, **परमेश्वर** से अच्छाई का उच्चारण करते हुए, इन्सानों के लिए दिव्य संदेश, इन्सानी चेतना से बात करते हुए" (पृष्ठ 332)। क्राइस्ट हम से सीधी बात करता है, हमें प्रेरित तथा निर्देशित करते हुए, हमें बताते हुए कि **परमेश्वर** क्या है तथा हमारे लिए दिव्य योजना क्या है। यह संदेश हमारे लिए सदा उपलब्ध होते हैं, जैसे ही हम **परमेश्वर**, हमारे **माता–पिता** से प्रार्थना के द्वारा अपने हृदयों को उन्हें प्राप्त करने के लिए खोल देते हैं।

इन ख्रीस्तीय संदेशों में हम केवल वह मार्गदर्शन ही प्राप्त नहीं करते है, जिसकी हमें ज़रूरत है, बल्कि यह भी सीखते हैं कि एक **परमेश्वर** के बच्चों की तरह हम कौन हैं। हमें मात्र मानवीय इतिहास से परे आध्यात्मिक वास्तविकता को देखने योग्य बनाया गया है। यहाँ हम **परमेश्वर** रचित सम्पूर्ण बच्चे को पाते हैं जो भौतिक वादों तथा अंधविश्वासों से अछूता है।

ज्योतिष विद्या के साथ ही कई अन्य मत हैं जो कि हमारी असली पहचान को स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता में दखल देते हैं। चिकित्सा तथा मनोविज्ञान में पाए जाने वाले कई इन्सानी दृष्टिकोण व्यक्तिगत क्षमता, सेहत तथा स्थिरता को परिभाषित करने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। पहली आज्ञा के प्रति हमारी निष्ठा द्वारा इन्हें **परमेश्वर** के बहुत अच्छे रूप की तरह हमारे आध्यात्मिक व्यक्तित्व की बेहतर समझ को सम्पूर्ण करना होगा।

जितनी निकटता से हम जीसस के उदाहरण का अनुसरण करते हैं उतने ही हम अन्धविश्वासों का विरोध करने में बेहतर सुसज्जित हो जाते हैं जो कि हमें **रचयिता** के प्रतिरूप से कम कुछ और ही दर्शाते हैं। सितारे हमें इस प्रतिरूप के बारे में नहीं बताते, जबकि कई बार सौर मंडल की तरफ ऊपर टकटकी लगा कर देखते हुए हम उसी तरह ब्राह्माण्ड की विशालता तथा प्रताप की झलकियाँ प्राप्त करते हैं, जिस तरह हमारे पूर्वजों ने की थीं। उन पलों में हम जानते हैं कि हमारे भविष्य सितारों में नहीं परन्तु **परमेश्वर** के हाथों में हैं, जिसने हमारी और इनकी रचना की।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.